

उमरांवकुंवरजी दीक्षा स्वर्ण जयन्ती स्मृति ग्रन्थ(फोल्डर नं. ०२०३५)

मुख्य टाइटल

समर्पण

प्रकाशकीय

सम्पादकीय

आभार

गुरुणी म. के गुणगान

अनुक्रमणिका

अभिनव संवत्सर संप्रवेश

प्रथम खण्ड –

आशीर्वचन-शुभकामना-संदेश ----- १-४८

काव्यमय अभिनन्दन ----- १-६०

द्वितीय खण्ड – व्यक्तित्व एवं कृतित्व

आत्माभिव्यक्ति ----- १

ज्योतिर्धर आचार्य-संक्षिप्त जीवन रेखा ----- ४

जय परम्परा के पांच पुष्प ----- ८

बहुआयामी व्यक्तित्व ----- २५

श्रमणीरत्न ----- २७

मेरे जीवन की सन्निर्मात्री परमपूज्या गुरुणीजी ----- ३०

महासती की प्रेरणा से स्थापित संस्थाएँ ----- ४१

म.सा. अर्चनाजी का शिष्या-परिवार ----- ४४

संघर्ष के तूफान में एक जलती दीपशिखा ----- ५०

मेरी आस्था की प्रेरणास्रोत ----- ६१

ग्रह भविष्य बताते हैं ----- ६६

ऐसा था बचपन ----- ६९

महासती श्री अर्चनाजी की काव्य साधना ----- ७३

श्री मधुकर मुनिजी म.सा. का योगदान ----- ८०

शत-शत अभिनन्दन ----- ८५

निर्मल मन्दाकिनी महासती श्री अर्चनाजी ----- ८८

एक महान् नारी ----- ९५

श्रमणी-आकाश के उज्ज्वल नक्षत्र ----- ९७

दिव्य विभूति श्री उमरावकुंवरजी ----- १०१

साधना की परमोज्ज्वल दीपशिखा ----- १०८

महासती श्री परमोज्ज्वल दीपशिखा ----- १०८

अभिनमन-अभिवन्दन-अभिनन्दन -----	११७
योगेश्वरी महासती श्री अर्चनाजी -----	१२१
एक अनोखा व्यक्तित्व -----	१२४
चमके सुयशचन्द्रिका -----	१२६
मांगलिक-कल्पवृक्ष -----	१२७
परमोपकारी गुरुणीजी महाराज -----	१२८
साधवो दीनवत्सला: -----	१२९
मांगलिक का माहात्म्य -----	१३२
नागराज का आगमन -----	१३३
राग और कलह से छुटकारा -----	१३४
प्रेरणा का प्रताप -----	१३५
बाधा हट गई -----	१३६
विषमुक्त हुआ -----	१३७
लकवा ठीक हो गया -----	१३८
दामाद स्वस्थ हो गया -----	१३९
नागराज का नमन -----	१३९
सफेद दाग से छुटकारा -----	१४०
पागलपन का पलायन -----	१४१
कुंडलिनी शांत हो गई -----	१४२
नाम की महिमा -----	१४३
महासतीजी का अभिज्ञान -----	१४३
चरण-रज का रहस्य -----	१४५
मांगलिक के चमत्कार ने चकित किया -----	१४६
मैंने स्वास्थ्यलाभ लिया -----	१४७
पेट दर्द जाता रहा -----	१४९
संस्मरण सुखद -----	१५०
दिव्य जीवन की चमत्कारिक घटना -----	१५३
नाम का प्रभाव -----	१५४
दिव्य सौरभ -----	१५५
समता की कसौटी पर खरी -----	१५६
ध्यान....निजी अनुभव -----	१५६
अचानक बरसा अमृत-----	१५९
फैले कीर्ति चतुर्दिक् -----	१६०
वाणी का वैभव -----	१६१
अनुकम्पा की मूर्ति -----	१६२

असीम है आस्था -----	१६३
आत्मसाधना का अनूठा आन्द -----	१६३
अज्ञात से अनूठे संकेत -----	१६४
दिशा-बोध -----	१६५
स्थूल से सूक्ष्म की ओर -----	१६६
स्वप्न में सन्देश -----	१६७
क्रोध से अक्रोध -----	१६७
मांगलिक का अद्भुत चमत्कार -----	१६८
घर आई ज्ञान गंगा -----	१६८
सहायता की दिव्यलोक के देव ने -----	१६९
दिव्य विभूतियाँ -----	१७१
सत्य को समझने की सत्प्रेरणा -----	१७१
रोम-रोम ऋणी -----	१७३
परदुःखकातर अर्चनाजी -----	१७३
अन्तस्तल पर अमृतवर्षा -----	१७६
प्रेतात्माओं से मुक्ति -----	१७६
वरदहस्त -----	१७७
चरणधूलि ने काम किया अमृत का -----	१७९
कैसे जाना मैंने -----	१७९
अभूतपूर्व संधारा -----	१८०
आलोक -----	१८१
उलझन सुलझ गयी -----	१८१
ज्ञान रो दीवलो -----	१८२
अदृश्य प्रावाज पर जगी आस्था -----	१८४
दिव्य ज्योति -----	१८४
मीठी महिमा -----	१८७
चमत्कार की मूर्ति-----	१८९
हृदयस्पर्शी अनुभूतियाँ -----	१९५
अर्चना की अर्चना -----	१९७
साधना के श्रेष्ठ स्रोत -----	२०३
कुलउद्धारक गुरुणीजी -----	२०४
प्रेरणास्रोत -----	२०५
स्वतःश्रद्धा जगी -----	२०६
प्रेतबाधा से मुक्ति -----	२०६
प्रेतबाधा से मुक्ति -----	२०७

स्वानुभव -----	२०९
देवकृत भविष्यवाणी -----	२११
शत-शत प्रणाम -----	२१३
मेरे जीवन की पथप्रदर्शिका -----	२१४
रूठी नींद लौट आई -----	२१६
धर्मामृत का पान किया -----	२१६
किशती को किनारा -----	२१७
तप का तेज निखरा -----	२१९
विरासत में मिली श्रद्धा -----	२२०
श्रद्धानत सिर -----	२२१
सुयोग के स्वास्थ्य लाभ -----	२२१
मुझे मेरा सम्बल मिला -----	२२२
सोते को जगाये -----	२२२
धर्म-आराधना का फल -----	२२३
स्तोत्रपाठ का अलनीय प्रभाव -----	२२४
नवकार मन्त्र का फलित -----	२२५
काटे दुःख के बन्धन -----	२२५
मैंने भई सुना मांगलिक -----	२२६
अनूठी आभा -----	२२६
आँखों देखा सत्य -----	२२७
सुना जैसा पाया -----	२२८
बाबजी की कृपा अकथनीय है -----	२२९
पू. म. श्री उमरावकुंवरजी म. सा. के वर्षावास -----	२३१
तृतीय खण्ड – प्रवचन पीयूष	
आत्म-निवेदन-----	१
अर्चनार्चन -----	३
अर्चना-प्रवचन	
भाव-शुद्धि-विहीन शुभ-कर्म खोखले -----	१६
सत्याहित्य का अनुशीलन-----	२८
संत और पंथ -----	३९
तूफानों से टक्कर लेने वाला आस्था का दीपक -----	५४
सम्पूर्ण संस्कृतियों की सिरमौर भारतीय संस्कृति -----	६९
दीर्घजीवन या दिव्यजीवन -----	८५
दहेजरूपी विषधर को निर्विष बनाओ -----	९४
विचार एवं आचार -----	१०३

चतुर्थ खण्ड – जैन संस्कृति के विविध आयाम

भगवान् महावीर की नीति – श्री देवेन्द्र मुनि -----	१
कर्म-स्वरूप प्रस्तुति – श्री रमेश मुनि -----	१४
कर्मवाद के आधारभूत सिद्धान्त – डॉ. शिवमुनि-----	२१
जैन अनुमान की उपलब्धियां – डॉ. दरबारीलाल कोठिया -----	२४
जैन तात्त्विक परम्पराओं में मोक्षरूप-स्वरूप – राजीव प्रचंडिया -----	३१
एकात्मकता के साये में पत्नी-पुत्री हमारी संस्कृति – डॉ. भागचन्द्र भास्कर -----	४७
जैन समाज दर्शन – प्रो. संगमलाल पाण्डेय-----	५३
जैनदर्शन के आलोक में पुत्रल द्रव्य – श्री सुकन मुनि म. -----	५९
शील जीवन की सुन्दर उपासना है – श्रीमती अलका प्रचण्डिया -----	६३
आध्यात्मिक जीवन का अभिन्न अंग-उपासना – कमला जैन -----	६७
स्याद्वाद की लोकमंगल दृष्टि एवं कथनशैली – शान्ताकुमारी धर्मावत -----	७९
वीतराग और स्थितप्रज्ञ-एक विश्लेषण – धर्मचन्द्र जैन -----	८५
आलंकारिक दृष्टिसे श्री उत्तराध्ययन सूत्र-एक चिन्तन – मुनि प्रकाशचन्द्र -----	९५
धर्म और दर्शन के क्षेत्र में हरिभद्र की सहिष्णुता – डॉ. सागरमल जैन -----	११३
आचार्य हरिभद्र के ग्रन्थों में दृष्टान्त व न्याय – डॉ. दामदोर शास्त्री -----	१२८
जैनधर्म में श्रमणियों की गौरवमयी परम्परा – श्री रतनमुनि -----	१४३
श्रमण का स्थल-जल-व्योम विहार – मुनि कन्हैयालाल-----	१४९
आगम का व्याख्यासाहित्य – डॉ. उदयचन्द्र जैन -----	१६०
जैनधर्म में ईश्वर की अवधारणा – सौभाग्यमल जैन-----	१७०
जैन और बौद्ध परम्पराओं में नारी का स्थान – मुनि नेमिचन्द्र -----	१७५
जैनदर्शन में तत्त्व-चिन्तन – सुभाष मुनि -----	१९४
आज के युग में महावीर की प्रासंगिकता – रिखबराज कर्णावट -----	२०१
वर्तमान समय में जैन सिद्धान्तों की उपादेयता – मुनिश्री विनयकुमार -----	२०४
राजस्थानी साहित्य को जैन संत कवियों की देन – डॉ. नरेन्द्र भानावत -----	२०७
मध्यकालीन राजस्थानी काव्य के विकास में कवियत्रियों का योगदान – डॉ. शान्ता भानावत -----	२१८
मेवाड़ में संस्कृत साहित्य की जैनपरम्परा – डॉ. प्रेम सुमन जैन -----	२३१
कमशिय एवं उनका योग – डॉ. ब्रह्ममित्र अवस्थी -----	२३६
धार्मिक रहस्यवाद में दिक्-काल-बोध – डॉ. वीरेन्द्रसिंह -----	२४३
प्राकृत बोलियों की सार्थकता – डॉ. जगदीशचन्द्र जैन -----	२४६
ध्येय-प्राप्ति का हेतु भावना – डॉ. आदित्य प्रचण्डिया -----	२५४
मन-एक चिन्तन-विश्लेषण - लक्ष्मीचन्द्र -----	२५९
संस्कृत-साहित्य के विकास में जैनाचार्यों का योगदान – डॉ. कस्तूरचन्द्र कासलीवाल -----	२६९
साधना की संप्राणता-कायोत्सर्ग – रमेश मुनि शास्त्री -----	२७६

श्रमण-साधना – डॉ. शोभनाथ पाठक -----	२९३
जैनधर्म में ईश्वरविषयक मान्यता – डॉ. महेन्द्रसागर प्रचण्डिया -----	२९६
जैनधर्म में आत्म-विज्ञान – जशकरण डागा -----	३००
आचार्य हरिभद्रसूरि का गृहस्थाचार – डॉ. पुष्पलता जैन -----	३०७
अंधविश्वास एवं मिथ्या-मान्यताओं के निवारण में नारी की भूमिका – माया जैन -----	३११
जैनधर्म में अहिंसा – डॉ. श्रीरंजन सूरिदेव -----	३१५
आज के जीवन में अपरिग्रह का महत्व – डॉ. हुकमचन्द जैन -----	३२१
धर्म की दिशा – डॉ. भगवतीलाल राजपुरोहित -----	३२२
जैन आगमों में आयुर्वेद विषयक-विवरण – डॉ. तेजसिंह गौड़ -----	३२५
जैनधर्म में समतावादी समाज-रचना के प्रेरक तत्त्व – डॉ. निजामउद्दिन -----	३३०
तत्त्वचिन्तन के सन्दर्भ में अनुभूतिपूरक सत्य का एक अद्भुत उपक्रम – डॉ. सी. एल. शास्त्री -----	३३९
The Jain Mathematical – Prof. L. C. Jain -----	348
Definition of the Living in Jain Cannons-An Evaluation – N. L. Jain-----	356
On Geometry of Jambudvipa – Dr. S. S. Lishk-----	375
पंचम खण्ड – योग साधना	
पंचविध ध्यान-पद्धति-स्वरूप विश्लेषण – महासती श्री उमरांवकुंवरजी -----	१
पातंजल-योग और जैनयोग-एक तुलनात्मक विवेचन – डॉ. लालचन्द्र जैन -----	६
वीतरागयोग – कन्हैयालाल लोढा -----	२४
जैनसाधना-पद्धति में ध्यान – कन्हैयालाल गोड़ -----	४६
ध्याता, ध्यान और ध्येय – आर्या सुप्रभाकुमारी -----	५६
ज्ञानार्णव में ध्यान का स्वरूप – डॉ. प्रेमसुमन जैन -----	६६
जैनदर्शन और योगसाधना - कमल माताजी -----	७२
योगदृष्टिसमुच्चय-एक विश्लेषण – डॉ. सी. एल. शास्त्री -----	७४
आचार्य हरिभद्रसूरि और उनका योग-विज्ञान – डॉ. हरीन्द्र भूषण जैन -----	९९
प्रेक्षाध्यान और शक्ति-जागरण – युवाचार्य महाप्रज्ञ -----	११६
जैन परम्परा में ध्यान – धर्मीचन्द चोपड़ा -----	१२०
ज्ञानार्णव-एक विश्लेषण – डॉ. सी. एल. शास्त्री -----	१२९
धर्म-साधना में चेतनाकेन्द्रों का महत्व – श्रीचन्द सुराना -----	१४४
योग-स्वरूप और साधना – एक विवेचन – साध्वी श्री मुक्तिप्रभाजी -----	१६२
हठयोग-एक व्यष्टि-समष्टि विश्लेषण – डॉ. श्यामसुन्दर निगम -----	१६६
योग और परामनोविज्ञान – प्रह्लादनारायण वाजपेयी -----	१७५
महर्षि अरविन्द की सर्वांगयोगसाधना – ब्रजनारायण शर्मा -----	१७७
योग और उसकी प्रासंगिकता – डॉ. विश्वंभरनाथ उपाध्याय -----	१९२
योग का विज्ञानीय स्वरूप – डॉ. वीरेन्द्र शेखावत -----	१९७
योग-आसनों की प्रासंगिकता-विशिष्टता – शान्तिलाल सुराना -----	२००

तान्त्रिकयोग-स्वरूप एवं मीमांसा – डॉ. रुद्रदेव त्रिपाठी -----	२०३
मसीही योग – डॉ. एलरिक बारलो शिवाजी -----	२०९
योग और आयुर्वेद – आचार्य राजकुमार जैन -----	२२१
योग क्यों – डॉ. नरेन्द्र शर्मा-----	२३०
योग के षट्कर्म एवं रोगनिवारण – डॉ. बी. के. बान्द्रे -----	२३५
वर्तमान युग में योग का नारी पर प्रभाव – डॉ. श्रीमती मायारानी आर्म -----	२३७
योग तथा नारी रोग – डॉ. के. सी. खरे -----	२४१
जैन-योग और उसका वैशिष्ट – डॉ. राममूर्ति त्रिपाठी -----	२४५
योग और संधि पीड़ा – डॉ. रतनचन्द्र वर्मा -----	२४९
अष्टांगयोग-एक परिचय – प्रा. अरुण जोशी -----	२५१
योगानुभूतियाँ – चन्द्रशेखर आजाद -----	२५३
जैन आगमों में योगदृष्टि – डॉ. सुभाष कोठारी -----	२५९
क्या मोटापा योग से कम होता है – डॉ. बी. के. बान्द्रे -----	२६४
Yoga and Health – Dr. M. L. Gharote-----	267
Tantra-Ecstasy Through Rituals – Dr. Kalidas S Joshi -----	278
Therapeutic Application of Yoga Techniques – Dr. M. L. Bhole-----	291
Yoga and Ayurveda – Dr. R. V. Ranade -----	302
Vipashyana and Preksha – Dr. J R Joshi-----	310
Guide to a fuller life – Dr. Jaydeva Yogendra -----	313
Concept of Asana-Is it an Abhbyasa or an Anusthana – Dr. B R Sharma-----	318
Exercising the Trunk – Smt. Sitadevi Yogendra -----	324
परिशिष्ट – अर्थसहयोगी महानुभावों का संक्षिप्त परिचय	